रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

Scanned by CamScanner

जयति राम रघुवंश हंस अवतंश सिया वर ।
जय जय रसिक नरेश रास रसिया उदार तर ॥६७॥
जयति मैथिली मधुर मंजु मन मोहन मन हर ।
जय जय जीवन मूरि कृपा गुण सिन्धु सुखद वर ॥६८॥
जयति अशोक सु विपिन रमण कारी रस सागर ।
जय जय जीवन प्राण प्रेम पालक नव नागर ॥६९॥
जयति स्वामिनी सीय सतत आश्रित सुखदानी ।
जय जय "सीताशरण" राजनन्दन पटरानी ॥७०॥

दो०-जयति जयति हृदयेश मम, जय जय परम उदार ।
जय जय "सीताशरण" पिय, जीवन प्राण अधार ॥१॥
जयति किशोरी लाड़िली, जय जय जीवन मूरि ।
जय जय 'सीताशरण' नित, दीजिय निज पग धूरि ॥२॥

इति श्रीं युगल माधुरी बिलाशे, बिबाहोत्तर देंव कन्या रस रासे सीताशरण सुमति प्रकाशे नवमोऽध्यायः सम्पूर्णम् ।

* दशमोऽध्यायः *

श्रीरामा राधन प्रकरणम्

छन्दरोला—

इमि निज सखियन केर प्रश्न सुनि राज किशोरी ।
वर बिचार चातुर्य सु निधि अति प्रेम बिभोरी ॥ १ ॥
परम शील विज्ञान रूप रस गुण कीं खानी ।
प्रीतम प्रेम विभोर यदपि चिन्तित दुख सानी ॥ २ ॥

Scanned by CamScanner

पिय के बिषम वियोग काम सर पीड़ित श्यामा।
तदपि सखिन सों कहे मधुर तर बचन ललामा॥ ३॥
ऐ मम प्रिय सहचरी बृन्द सब हो पवित्र अति।
जपहु षड़्क्षर मन्त्र पिया को सकल विमल मति॥ ४॥
श्रुति में मन्त्र अनेक सबन में परम प्रधाना।
मन्त्रराज अस कहत याहि सब सन्त सुजाना॥ ५॥
याको जपत सनेह सहित जन स्वल्पहिं काला।
पावत परम अभीष्ट सुखद वर सुभग रसाला॥ ६॥
बिधि हरि हर सुरनाथ सकल सुर नर मुनि ज्ञानी।
सर्व श्रेष्ट जिय जानि जपत यहि को सुख मानी॥ ७॥
जपत षड़ाक्षर मन्त्र सबिधि पिय मुख मयंक वर।
होय हमनिं प्रत्यक्ष हरै विरहाग्नि प्रवल तर॥ ८॥
बिन देखे बिधु बदन नाथ को कोटि उपाई।
हम सब के उर केर बिषम विरहाग्नि न जाई॥ ९॥
स्वप्नहुँ मिलै न शान्ति यत्न कोइ काम न आवै।
केवल पिय को मन्त्र पियहिं प्रत्यक्ष करावै॥१०॥
सुनि सिय के वर बचन सरस सब नवल नागरी।
बोलीं दोउ कर जोरि महा रस रति उजागरी॥११॥
हे उदार स्वामिनी कृपामयि हे श्री सीते।
हम सव को गुरु रूप आप शुभ चरित पुनीते॥१२॥
कीजिय सोइ वर मन्त्र हमनि उपदेश दया करि।
जपिहैं सहित सनेह परम उत्साह हृदय भरि॥१३॥

Scanned by CamScanner

लखि तिन को वर भाव शुद्ध हिय राजकिशोरी ।
सतत प्रसन्न स्वभाव पिया प्रेमामृत बोरी ॥१४॥
दियो सबनि पिय मन्त्र षड़ाक्षर परम सु पावन ।
जपबिधि दई बताय ध्यान युत अति मन भावन ॥१५॥
अखिल नवल नागरी नेह युत राजिव लोचन ।
ध्यावहिं करुणा धाम राम मन हर भव मोचन ॥१६॥
यह ही सु व्रत महान सबनि ने दृढ़ करि धारो ।
पूजैं श्री रघुवरहिं देह सुख स्वाद बिसारो ॥१७॥
बहु प्रकार फल फूल बिपिन से प्रमुदित लावहिं ।
पिय को भोग लगाय स्वयं केवल जल पावहिं ॥१८॥
यह कठोर व्रत धरेउ कलुश सब भाँति नशाना ।
प्रीतम प्रेम प्रवाह प्रवल हिय में हुलसाना ॥१९॥
भयो हृदय अति विशद चित्त वृत्तियाँ पिया में ।
अति अनन्यता युक्त लगीं सुख लहैं हिया में ॥२०॥
पिय की मूरति मंजु मधुर हिय में अवलोकी ।
पावपिं परमानन्द तदपि नहिं होहिं विशोकी ॥२१॥
विरह वेदना विषम नवल नित हृदय जरावत ।
पिय विरहानल माहिं सूक्ष्मतम् कलुष नशावत ॥२२॥
पिय विरहागिनि प्रवल न जब तक हिय में जागत ।
चित्त वृत्तियाँ शुद्ध भाव पिय में नहिं लागत ॥२३॥
तब तक "सीताशरण" करै कोइ कोटि उपाई ।
हृदय छिपी बासना सूक्ष्म कबहूँ नहिं जाई ॥२४॥

Scanned by CamScanner

पिय विरहाग्नि महान जबहिं सब देह सुखावै ।
तब नाशैं सब कलुष सूक्ष्म बासना मिटावैं ॥२५॥
तब जागै अनुराग मिलैं तब प्रीतम प्यारे ।
होवैं "सीताशरण" जीव तब परम सुखारे ॥२६॥
अतिसय कोमल हृदय सकल ललना समुदाई ।
पाय प्रिया से मन्त्र पिया को जपि सिधि पाई ॥२७॥
करत कठिन अति सुतप मास गत भयो एक जब ।
जीत लियो सब भाँति पवन योगिनी सिद्ध तब ॥२८॥
लगन लगीं सब सखी पिया सौन्दर्य चित्त धरि ।
प्रीतम दृग को निरखि जपैं वर मन्त्र मोद भरि ॥२९॥
सिद्ध योगिनी सरिस भईं सब रघुवर वामा ।
ध्यावहिं "सीताशरण दिवस निशि पिय अभिरामा ॥३०॥
जासु महीना माहिं कठिन व्रत सखियन धारो ।
परम बिरागी बनी सकल सुख स्वाद बिसारो ॥३१॥
परम तपस्या युक्त मन्त्र पिय को निर्मल मन ।
जपेउ निरन्तर नेम सहित अतिसय सनेह सन ॥३२॥
पिय की पूजा कीन मास सो प्रभु रुचि जानी ।
अधिक मास बन गयो कहत पुरुपोत्तम ज्ञानी ॥३३॥
पुरुषोत्तम कहलात जगत में श्री रघुनन्दन ।
प्रेमिन प्रेणाधार प्रेम पालक जग वन्दन ॥३४॥
तुरुषोत्तम येहि मास केर याही से नामा ।
भयो महान प्रसिद्ध लोक में अति अभिरामा ॥३५॥

Scanned by CamScanner

तब पुरुषों में परम सु उत्तम रमण शील पिय ।
श्रीरघुराज किशोर स्व महिलन सुरुचि जानि जिय ॥३६॥
पाणि ग्रहीता बिपुल नवल नायिका स्वकीया ।
काम केलि कल कुशल कला कौतुक करणीया ॥३७॥
अति विशुद्ध मन सकल प्रेम पूरित वर वामा ।
जप पूजा अरु ध्यान करैं पिय को निशि यामा ॥३८॥
तब हो परम प्रसन्न मनोरामा तन धारी ।
सजि षोड़श श्रृंगार बिभूषण सबन सँवारी ॥३९॥
नवल नायिका रूप युवावस्था मनहारी ।
गर्वीली गज चाल मन्द मुसुकनि अति प्यारी ॥४०॥
चितवनि अतिसय चपल चतुर चित चोरन वारी ।
निरखत "सीताशरण" मुनिन मन मोहन हारी ॥४१॥
निज महिला गन मध्य प्रगट हो कर यों बोले ।
करि कटाक्ष कमनीय मधुर तर सरस अमोले ॥४२॥
हे ललना गन सुनो कष्ट इतनो तुम सब करि ।
पूजा जप तप करहु कवन सो कार्य हृदय धरि ॥४३॥
सुनि वाके वर बचन सरस मनहर अति प्यारे ।
बोलीं सब नायिका पाय मन मोद अपारे ॥४४॥
हे देवी तुम कौन अहो केहि की प्रिय वामा ।
कहँ से आईं यहाँ कहो मम मन अभिरामा ॥४५॥
सहज विराग स्वभाव मोर मन परम शुद्ध तर ।
पिय तजि लगत न अपर मोहिं पर तुमहिं निरखि कर ॥४६॥

Scanned by CamScanner

अतिसय प्रेमाशक्त होत लखि सुछबि तिहारी।
आकृति परम अनूप सु गति शुचि अति मन हारी ॥४७॥
बूझति हो येहि भाँति हमनि सो कवन सो कारन।
निज पिय केर वियोग भरी क्या विपिन मझारन ॥४८॥
व्याकुल फिरहु अकेलि बिबिधि बिधि भय बिसाराई।
जब बूझा येहि भाँति सकल सखियन दुलराई ॥४९॥
तब बोली मन मुदित मन्द हँसि सो वर वाला।
बचन मधुर मन हरन परम सुख सदन रसाला ॥५०॥
हे अनघे हम कौन और केहि की प्रिय वामा।
आईं कहँ से यहाँ कहाँ मेरो घर ग्रामा ॥५१॥
और काह मम नाम चहिय हम को क्या करना।
सत्य न जानौं कुछहु कहहुँ तुम से क्या वरना ॥५२॥
तुम सब तप करि भईं परम निर्दोष महाना।
कैसे मिथ्या कहौं तुमहिं किमि करौं बहाना ॥५३॥
हाँ एक बात अवश्य कहौं सुनिये मन लाई।
यदि होवे कोइ कार्य आप को कहहु सुनाई ॥५४॥
अथवा कोइ कामना आप के चित्त मझारी।
होवे तो मैं करौं तुमहिं सब भाँति सुखारी ॥५५॥
करि सहायता सकल भाँति तब काम पुरावौं।
यदि होवे कोइ कष्ट कहिय सो बेगि मिटावौं ॥५६॥
अभीष्ट पूरक बचन सुनत वाके सब वाला।
अति प्रसन्न मन सकल कहहिं वर बचन रसाला ॥५७॥

Scanned by CamScanner

हे सखि हम सब केर स्वामिनी जनक लली पति ।
अन्तर्हित हो गये रूप रस सार विमल मति ।।५८।
उनके बिन एक मास भयो हम सब नव बाला ।
प्रेमावेश बिशेष रहैं निशि दिवस बिहाला ।।५६।।
उनके संग बिहार रमण लीला कीने बिन ।
अब तक को जो समय व्यर्थ भो बीते जो दिन ।।६०।।
देखे बिन मुख चन्द्र पिया को मोहिं जग माहीं ।
अति सूनो दर्शात कहूँ कछु दीखत नाहीं ।।६१।।
तुम में कछु सामर्थ होय तो हमनि पिया से ।
दीजिय वेगि मिलाय मिटै सन्ताप जिया से ।।६२।।
यदि होवै तव बचन सत्य तो येहि विधि जानो ।
मरण शील जन काहिं पियायो अमृत मानो ।।६३।।
जो दे सुधा पियाय परम उपकारी सोजन ।
जग में समझाजात वदत सज्जन उदार मन ।।६४।।
अहो महाभागिनी सत्य यदि इसी प्रकारा ।
तो तव कृपा प्रसाद जगै सौभाग्य हमारा ।।६५।।
हे शुभ ललने सखी बचन चातुरी तिहारी ।
ब्रह्माणीके सरिस हमनि लागति अति प्यारी ।।६६।।
उमा सरिस तन तेज रूप रति सम सुख दाई ।
इन्द्राणी सम सुभग बसन भूषण छबि छाई ।।६७।।
लीला हास विलाश सुमन सो अंग छिपावन ।
लज्जा देवी सरिस परम पावन मन भावन ।।६८।।

Scanned by CamScanner

कहि येहि विधि वर बैन सकल ललना समुदाई।
उत्कण्ठा यह करैं हृदय में अति हर्षाई ॥६९॥
यहि बिधि वश मैथिली मनोहर पुरुष रूप धरि।
पुण्य वती नायिका याहि सँग रमै मोद भरि ॥७०॥
तौ दम्पति की दिव्य सु जोड़ी यह भल सोहै।
पावै नयना नन्द लाभ जो—जो मन जोहै ॥७१॥
अथवा श्री मैथिली केर पति बनि सँग सोहैं।
हम सब दर्शन करैं पाय दृग फल मन मोहैं ॥७२॥
येहि बिधि बिपुल बिचार करैं मन में सब नागरि।
कामिनि काम कलोल कुशल रस निधि गुण आगरि ॥७३॥
तब नायिका स्वरूप प्राण वल्लभ मृदु हँस कर।
श्री विदेश नन्दिनी केर कर पकरि मोद भर ॥७४॥
बोले अति मृदु बयन सुनहु हे सखि मम प्यारी।
यदि खोजिय तो मिलैं शीघ्र तव पिय धनु धारी ॥७५॥
सुनि वाके वर बचन जनकनन्दिनी मुदित हिय।
भोरी सरल स्वभाव न पहिचाने येही पिय ॥७६॥
पुनि बोली सो अली लली सों हँसि प्रिय बानी।
देवि इसी क्षण मिलैं अगर तव पति सुख मानी ॥७७॥
तो देइहो क्या मोहिं कृपा करि देहु बताई।
सुनि मिथिलाधिप लली हृदय में आनँद पाई ॥७८॥
पिय की प्रिय ईश्वरी प्राण हू ते अति प्यारी।
हँसि बोलीं प्रिय बयन सुनिये हे बहिन हमारी ॥७९॥

Scanned by CamScanner

जो पिय मिलिहैं आय तुमहिं हम कण्ठ लगाई ।
मनिहैं नित प्रिय बहिन सरिस नव नेह बढ़ाई ॥८०॥
अस कहि श्री मैथिली वाहि हँसि कण्ठ लगायो ।
गाढ़ालिंगन कीन हृदय में अति सुख पायो ॥८१॥
तब भल अवसर पाय प्राण वल्लभ प्रवीण तर ।
प्रगटे अपने रूप माहिं लपटाय सिया गर ॥८२॥
मन्द मधुर मुसुकात कण्ठ लगि परम प्यार भरि ।
पावत परमानन्द प्रेम पूरित विनोद करि ॥८३॥
येहि प्रकार भइ भ्रान्त सखिन को एक-एक माहीं ।
अपरहिं प्रीतम जानि परस्पर हिय लपटाहीं ॥८४॥
निज मन करैं विचार यही मम आत्म नाथ प्रिय ।
गाढ़ालिंगन करैं भरैं उत्साह परम हिय ।८५॥
जेहि बिधि श्रीमैथिलहिं प्यार अति कियो रसिक वर ।
ताही बिधि सुख स्वाद परस्पर लहैं मधुर तर ॥८६॥
वदत व्यास भगवान सुनहु शौनक मुनि राई ।
यह नहिं कछु आश्चर्य सखिन सुख लह्यो अघाई ॥८७॥
जहँ पर दासिहु वृन्द लहैं सुख स्वाद महाना ।
सखियन्न को सुख स्वाद कवन कवि करै बखाना ॥८८॥
सोइ सुख स्वाद महान व्यास हू निज हिय पावत ।
जाको "सीताशरण" सतत शिव अज उर ध्यावत ॥८९॥
जापर होहिं प्रसन्न रसिक चूड़ा मणि रघुवर ।
दुर्लभ तेहि कछु नाहिं जगत में सकल सुलभ तर ॥९०॥

Scanned by CamScanner

यदि कोइ शंका करै तिया सँग तिया पुरुष सुख।
कवन भाँति अनुभवत परस्पर भूलि महासुख ॥९१॥
सो बतलावत सूत सुनहु शौनक मुनीश वर।
यह जीवन धन प्राणनाथ रघुराज कुँअर कर ॥९२॥
गन्धर्वी वर कला ललित विद्या महान तर।
महत्शक्ति सम्पन्न परम आश्चर्य मोद कर ॥९३॥
वाही केर महात्म्य बिपुल हम तुमहिं सुनायो।
सोइ विद्या बिस्तारि सबनि रघुवीर रमायो ॥९४॥
जो वरबश सब काहिं करै मोहित निज माहीं।
जाको महत्प्रभाव बचै अस कोउ जग नाहीं ॥९५॥
परमतत्त्व परमीश राम सुख धाम मोद घर।
तिनके विशद चरित्र माहिं विश्वास सुखद वर ॥९६॥
क्योंकि रुक्ष अरु व्यर्थ दोष युत कर्म अपारा।
तिन में कदा न रमत भूलि हू राम उदारा ॥९७॥
श्री रघुवीर बिहार बिपुल बिधि रति रस रंगा।
परम दिव्य निर्दोष सुखद शुचि रास प्रसंगा ॥९८॥
सज्जन प्राणाधार सजीवनि मूरि सरिस प्रिय।
"सीताशरण" सुजान सतत ध्यावत अपने हिय ॥९९॥
बोलीं पिय सों बचन मधुर तर प्यार समाये।
हृदयेश्वर क्या रूठि हमनि से अनत सिधाये ॥१००॥
दो०—यह कह कर श्री सूत पुनि, बोले अति मृदु वयन।
लखि पिय को ऐसो चरित, जनक लली सुख अयन ॥१॥

Scanned by CamScanner

अथवा क्या बड़ धूत आप हैं हे रसिकेश्वर।
क्या हम में कोइ दोष लखा तुम ने प्राणेश्वर॥ १॥
क्या हम को तजि अपर केर कामना हृदय करि।
करि सु धूर्तपन गये आप उत्साह मोद भरि॥ २॥
उदासीन क्या हुये हमनि से हे जीवन धन।
नवल नायिकहु बनत लाज नहिं लगी तनक मन॥ ३॥
वाह-वाह पिय खब आप हम सबनि रुवायो।
अन्तर हित हो नाथ मास भर हृदय जरायो॥ ४॥
जब येहि बिधि मैथिली पियहिं निज बचन वान सों।
बहु बिधि बेधित कीन मानि प्रिय परम प्रान सों॥ ५॥
व्यंग बचन बहु करैं प्रणय बश कबहुं मन्द हँसि।
कबहूँ भरि अति क्रोध बचन बोलैं सनेह फसि॥ ६॥
तबहुँ प्रेयसी परम सुखद निज देवी मन की।
सब विधि जानन हार सतत पालक रुचि जन की॥ ७॥
प्रीतम परम सुजान रसिक चूड़ामणि रघुवर।
कोप भरी मृदु गिरा प्रिया की जानि मधुर तर॥ ८॥
नहिं मान्यो कछु खेद हृदय में अति सुख मानी।
कहि प्रमुदित प्रिय बचन प्रिया को बहु सनमानी॥ ९॥
मन में कीन बिचार ज्ञान गुण धाम नेह घर।
प्रिया प्रेम वश कहे बचन मो कहँ कठोर तर॥१०॥
सोमो महँ नहिं घटत विषय याके हम नाहीं।
अस मन सोचि प्रसन्न परम सिय लखि मुसुकाहीं॥११॥

Scanned by CamScanner

बोले सरस सनेह सने प्यारी सों बयना।
प्रीतम प्राण अधार रसिक मणि राजिव नयना ॥१२॥
हे मम जीवन मूरि प्राण वल्लभे हमारी।
रुष्ट न तुम से भये कदा हम प्राण अधारी ॥१३॥
अन्तरात्मा मोर रावरे गुण गण केरी।
प्रिय पियूष करि पान पुष्टता लही घनेरी ॥१४॥
याते हर्षित रहति सर्वदा निशिदिन मम मति।
धूर्त न हम हे प्रिये सरल मन चित उदार अति ॥१५॥
उदासीन क्यों होहिं आप से हम हे प्यारी।
तुमहिं त्यागि नहिं अपर केर कामना हमारी ॥१६॥
निज प्रिय सखी समाज केर गुण हम नहिं जानै।
यद्यपि नहिं अस बात प्रीति हिय की पहिचानै ॥१७॥
पर हम परम गुणज्ञ रावरे दोष न देखत।
श्री मैथिली तुम्हार सिवा तिय आन न पेखत ॥१८॥
जनक सुते सर्वदा आप में ही अनुरागौं।
चित में तुम को त्यागि आन के प्रेम न पागौं ॥१९॥
किन्तु कहौं का प्रिये कार्य्य ऐसो कछु आयो।
पूज्य पिता ने मोहिं याद करि वहाँ बुलायो ॥२०॥
वाही केर विधान करन हम नगर सिधारे।
लियो पिता ने रोकि तहाँ बहु कार्य्य बिचारे ॥२१॥
हे मम प्रिये प्रवीण कोमलाङ्गी रस रूपा।
गये सही हम हृदय धारि तव सुखद स्वरूपा ॥२२॥

Scanned by CamScanner

जब तक तुम से बिलग रहे तब तक हे प्यारी ।
पल पल सुमिरन कियो रावरो प्राण अधारी ॥२३॥
हाँ अवश्य एक बात गये पूछे बिन तुम से ।
आज्ञा मागी नहीं भई है यह त्रुटि हम से ॥२४॥
यह अपराध हमार कृपामयि क्षमा करीजिय ।
क्षमा करन के योग्य प्रिये प्रेमामृत दीजिय । २५॥
कटि प्रदेश तव सूक्ष्म परम क्षमता दर्शावै ।
क्षमा मयी सुठि मूर्ति हृदय में मोद बढ़ावै ॥२६॥
नहिं हम आज्ञा लीन आप से प्राण पियारी ।
कारण एक प्रधान देखु निज हृदय बिचारी ॥२७॥२७॥
मैं सोचा मन माहिं प्रिया ते आयसु मागत ।
यदि प्यारी नहिं देहिं जाउँ कैसे डर लागत ॥२८॥
बिन गमने पितु पास होइ नहिं कारज उनको ।
याते पूछे बिना तुमहिं कीनो निज मन को ॥२९॥
पुनि मन कियो बिचार पिता ने हमहिं बुलायो ।
अवश्य मेव महान कार्य्य उनको कोइ आयो ॥३०॥
जो मैं तुम से कहौं तुम्हारी रस मयि लीला ।
बिघ्न परै येहि माहिं सकल परिकर दुख शीला ॥३१॥
अस अपने मन सोचि गये हम बिना बताये ।
करि पितु को सब कार्य शीघ्र अति तव ढिग आये ॥३२॥
जानहु तुम सब भाँति प्रिये मम सरल स्वभाऊ ।
धूर्तपना छलछन्द सिखे हमने नहिं काऊ ॥३३॥

Scanned by CamScanner

जानेउ नहिं मैं क्लेश बहुत तुम सब इमि पैइहो ।
मेरे बिषम वियोग माहिं निज देह सुखैइहो ॥३४॥
अतिसय सरल स्वभाव मैथिली पिय की बानी ।
परम प्रेम रस पगी जानि साँची करि मानी ॥३५॥
पुनि निज जीवन प्राण नाथ के पकरि युगल कर ।
माणिक मण्डप मध्य गईं हिय में सनेह भर ॥३६॥
बैठि गईं मुसुकाय पिया बिधु बदन निहारी ।
पावहिं परमानन्द परस्पर गर भुज धारी ॥३७॥
मणि मण्डप आसीन सिंहासन सेव्य युगल वर ।
लखि सब सखी समाज मुदित हिय परम प्यार भर ॥३८॥
आईं मण्डप निकट लिये कोइ छत्र चँवर कर ।
कोइ व्यजनादिक लिये निकट आईं सनेह भर ॥३९॥
कोइ लीने जलपात्र कछुक मृदु बचन हास्य भरि ।
करहिं विनोद बिलाश महा रस रास हृदय धरि ॥४०॥
येहि बिधि नव नागरी सकल आनन्द समाई ।
निज निज सेवा सौंज लिये सेवहिं हर्षाई ॥४१॥
लखि तिनकी अति प्रेम मयी सेवा सुखकारी ।
कोमल हिय मैथिली प्राणपति गल भुज डारी ॥४२॥
बोलीं सहित सनेह सुनहु हे राजिव नयना ।
अति उदार रमणीय रसिक वल्लभ रस अयना ॥४३॥
ये सब नव नायिका कमल नयनी अबलागन ।
तुम्हरे हित तप करत करत अति भईं खिन्न तन ॥४४॥

Scanned by CamScanner

पाये बिना अहार नाथ एक मास बितायो ।
निशिदिन तव पद कंज मंजु में चित्त लगायो ॥४५॥
तव पद पंकज पूजि पिया सुख स्वाद बिसारी ।
रहीं दिवस निशि बिकल सकल नायिका तिहारी ॥४६॥
यासे हे प्रिय प्राण नाथ जीवन धन प्यारे ।
रस लम्पट हृदयेश चतुर मणि नृपति दुलारे ॥४७॥
अब तुमको यह उचित प्राण रक्षा इन केरी ।
कीजिय हे प्राणेश विनय मानिय यह मेरी ॥४८॥
येहि बिधि सुनि प्रिय बचन प्रिया के सने प्रेम रस ।
बोले रसिक नरेश प्राण वल्लभ उदार यश ॥४६॥
हे प्राणाधिक प्रिये तुमहिं तजि नगर सिधारा ।
मै निशिदिन अति व्यग्र मनहिं पितु काज सँवारा ॥५०॥
मेरो मनचित रहेउ सर्वदा तुम सब पासा ।
प्रेम प्रणाली विज्ञ सतत हम रहे उदासा ॥५१॥
भोजन तुम्हरे संग कियो हम ने उमंग भरि ।
पायो परमानन्द परम उत्साह हृदय धरि ॥५२॥
तुम सब केर वियोग माहिं मोहिं भूख न लागी ।
रहेउ तुम्हारे प्रेम सुधा में मैं नित पागी ॥५३॥
याते बीत्यो मास एक भोजन नहिं पाया ।
मैंने निज मन माहिं सुदृढ़ करि यह ठहराया ॥५४॥
मेरे दर्शन बिना प्रिया भोजन नहिं पैइहैं ।
हमरे विषम वियोग माहिं दिन रैन बितैइहैं ॥५५॥

Scanned by CamScanner

मैं इमि चिन्तन करत हहेउँ सन्तत मन माहीं।
याते जीवन मूरि कीन्ह भोजन मैं नाहीं ॥५६॥
मम इन्द्रिय आतमा तुम्हीं में निशिदिन लागी।
यदपि रहेउँ मैं दूरि तदपि तुम्हरेहि रस पागी ॥५७॥
तुम्हरे बिन हे प्रिये अगर भोजन हम पाते।
तो निश्चय सठ जनन माहिं गिनती हो जाते ॥५८॥
अतः प्रिये तजि तुमहिं नहीं भोजन मैं पाओ।
जिय की जाननि हार सत्य मम बच पतियाओ ॥५९॥
कहत सूत मुनिराज सुनहु शौनक जब इमि पिय।
बोले बचन रसाल मधुर मन हरन उमगि हिय ॥६०॥
प्रियै भयो सन्तोष परम सुनि पिय वर बानी।
सरल हृदय मैथिली बात साँची सब मानी ॥६१॥
सरल सुगन्धन युक्त पदारथ बिबिधि अन्न बर।
शुचि सुन्दर पक्वान भरे सुख स्वाद मोद कर ॥६२॥
स्वकर सनेह समेत दया सागर सुषमा कर।
प्रीतम परम परेश प्रेम पूरक उदार तर ॥६३॥
उर भरि भाव अपार प्रिया को प्रथम पवाई।
प्यारी करसों खात स्वयं रस सिन्धु समाई ॥६४॥
पुनि हिय प्रेम बिभोर सखिन को स्वकर पवावत।
तिन सब कर सों मुदित स्वयं हँसि-हँसि पिय पावत ॥६५॥
पगि अनुराग अपार सबहिं रस रंग रँगाई।
सुख युत भोजन कियो सखिन सँग सिय रघुराई ॥६६॥

Scanned by CamScanner

पुनि पिय परिकर वृन्द सरस ताम्बूल सु वीरी ।
मधुर सुगन्धन भरीं पवावत स्वकर सखीरी ॥६७॥
तासों रंजित लसत सुभग मुख कन्ज हृदय हर ।
अंग राग शुचि दिव्य अगर आदिक सुगन्ध वर ॥६८॥
तन में धारण किये राज नन्दन मन भावन ।
तासु सुगन्धी बिबश जुरे अलि बृन्द सुहावन ॥६९॥
करत मधुर गुंजार सरस प्रीतम गुन गाना ।
पावत परमानन्द सखिन युत रसिक सुजाना ॥७०॥
येहि बिधि नृप शिरताज मुकुट मणि चक्रवर्ति सुत ।
निज रामागण संग लसत रमणीय वेष युत ॥७१॥
करत विहार विनोद बिपुल बिधि रति रस कारी ।
सखिन सहित सिय लाल ललित लीला विस्तारी ॥७२॥
तेही समय विशाल फूल फल सहित रसाला ।
विटप सु डाली माहिं सखिन हिंडोल सँभाला ॥७३॥
विरचित रत्न समूह जगमगत सुरन सु मन हर ।
बिबिधि बिधान समेत झुलावन चहत युगल वर ॥७४॥
सखियन कीनी विनय जोरि कर हे पिय प्यारी ।
झूलन भयो तयार पधारिय गलभुज धारी ॥७५॥
सुनि सखियन की विनय प्रिया हियकी रुचि जानी ।
बोले रसिक नरेश प्राण वल्लभ सुख मानी ॥७६॥
हे प्राणाधिक प्रिये सखिन सुख स्वाद देन हित ।
झूलन पर राजिये सहित उत्साह मुदित चित ॥७७॥

Scanned by CamScanner

सुनि पिय की रस सनी मधुर प्रिय गिरा सुहावन ।
मेघ सरिस गम्भीर सुखद मनहर अति पावत ॥७८॥
प्रमुदित श्री मैथिली पिया हिय सों लपटाई ।
उठीं सनेह समेत उमगि रस सिन्धु समाई ॥७९॥
धरि प्रीतम भुज अंश युगल मिथिलेश दुलारी ।
गमनी झूलन ओर निरखि पिय बदन सुखारी ॥८०॥
युगल रसिक शिरमौर झमकि झूलन पर राजत ।
चहुँदिशि सखी समाज सौज सेवा कर साजत ॥८१॥
जिमि नवीन घन माहिं लसत दामिनि द्युतिकारी ।
तिमि पिय हिय बिच लसै मैथिली रूप उजारी ॥८२॥
अति रमणीय सुवेष परम मन हरन सुहावन ।
परिकर उर सुख दैन प्राण वल्लभ मन भावन ॥८३॥
तथा रसिक शिरमौर सिया सँग शोभा पावत ।
पहिरे भूषन बसन ललित सखियन मन भावत ॥८४॥
अंग कान्ति कमनीय छटा छिटकति चहुँ ओरी ।
निरखैं "सीताशरण" सखिन युत राजकिशोरी ॥८५॥
मन हर चित्र विचित्र बसन भूषन तन धारे ।
लसत परम चितचोर राज नन्दन सुकुमारे ॥८६॥
बोलत बचन विनोद वलित प्रिय मधुर सरस तर ।
सखियन आणँद कन्द हरन दुख द्वन्द मोद कर ॥८७॥
नयन कमल कमनीय सखिन मन मोहन हारे ।
चितवनि अति प्रिय लगत केश कुंचित घुँघरारे ॥८८॥

Scanned by CamScanner

गोल कपोल अमोल बोल जनु सुमन सु झारत ।
पगि सिय के अनुराग मधुर वर वयन उचारत ॥८९॥
ललित हिंडोला मध्य लसत सिय पिय सुख पाई ।
लखि गन्धर्ब कुमारि राग हिंडोल सुनाई ॥९०॥
नृत्यहिं भरि अनुराग बिबिधि बिधि वाद्य बजाई ।
राज कुमारी निकर मुदित मन रहीं झुलाई ॥९१॥
रत्न जड़ित बिस्तार दीप्ति युत ललित झुलन वर ।
झूलत युगल किशोर परम रस बोर मुदित उर ॥९२॥
श्रेष्ठाङ्गी किन्नरन सुता बहु आनँद पाई ।
नृत्यहिं भरि उत्साह प्रिया प्रीतमहिं रिझाई ॥९३॥
नीति मार्ग में कुशल महाँ विद्या धर वाला ।
बाजा रहीं बजाय बिबिधि वर राग रसाला ॥९४॥
गोप कुमारी निकर मणिन जड़ि चँवर लिये कर ।
नाग सुता मन मुदित छत्र लीने सनेह भर ॥९५॥
कमल सुमन कर लिये खड़ीं बहु यक्ष कुमारी ।
अपर विपुल नागरी बसन भूषन कर धारी ॥९६॥
केतिक वालरसाल सु क्रीड़ा पक्षि लिये कर ।
तोता मैना आदि बिपुल पक्षी अतिमन हर ॥९७॥
लिये खड़ीं वर वाल युगल कर जलज लिये पिय ।
तथा लिये मैथिली युगल कर कंज हर्षि हिय ॥९८॥
बहुत सहचरी रत्न नील मणि जटित दण्ड बर ।
लीने व्यजन विचित्र चित्र चित्रित प्रमोद भर ॥९९॥

Scanned by CamScanner

लीन्हें दोउ दिशि खड़ीं परम रमणी सुकुमारी।
सेवहिं सहित सनेह लहैं मन मोद अपारी ॥१००॥

दो०–सब श्रम दूर करन हृदय, भरन परम सुख स्वाद।
"शीताशरण" सु व्यजनवर, दायक अति अह्लाद ॥ २ ॥

येहि बिधि युगल किशोर सखिन सेवित रस पागे।
झूलत सहित सनेह परस्पर अति अनुरागे ॥ १ ॥
बिंपुल नवेलिन केर मंजु ललितानुबन्ध वर।
सरस सुखद सब भाँति परम मन हरन मधुर तर ॥ २ ॥
सुनि सुनि दोउ चित चोर हृदय में अति हर्षाहीं।
करत केलि कमनीय नवल छण छण पुलकाहीं ॥ ३ ॥
बहु सखि स्तुति करहिं निपुणता सींवं युगल वर।
सरस सु कोमल हृदय लसत हिंडोल लपटि गर ॥ ४ ॥
दिव्य काम सुख चाह प्रबल इच्छा मन माहीं।
प्रेमवती बहु सखिन सहित सुख सिन्धु समाहीं ॥ ५ ॥
हेम मणिन बहु रत्न केर सौरभ युत चरन।
बर्षाबत भरि नेह परस्पर रति रस पूरन ॥ ६ ॥
करत बसन्त विहार विपुल वर अतर उड़ाई।
उठत सुगन्ध झकोर सबनि मन मोद बढ़ाई ॥ ७ ॥
कदा सखिन रुचि जानि अमित वर रूप बनाई।
झूलत सबके संग रंग भरि नेह जनाई ॥ ८ ॥
बिपुल रसाल बिशाल माहिं मणि जटित हिंडोरा।
लगे अनेक प्रकार सबनि में पिय चित चोरा ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

झूलत ललनन संग परम प्रेमामृत पागी।
नवल नायिका बृन्द सकल पिय पद आनुरागी ॥१०॥
चंचल नयन बिशाल लाल के रूप लुभानी।
झूलहिं पिय के संग रंग रँगि अति सुख मानी ॥११॥
गावहिं गीत रसाल परस्पर अति मन हारी।
पावहिं परमानन्द स्वाद सुख अकथ अपारी ॥१२॥
निज मन सोचहिं सकल हमहिं पर जीवन धन पिय।
राखत सब से अधिक प्यार करुणानिधान जिय ॥१३॥
मानत सब से अधिक मोहिं रसिकेश रँगीले।
पगि मेरेहिं अनुराग लहत सुख गुण गर्वीले ॥१४॥
यासे मेरे साथ बैठि झूलत हृदयेश्वर।
करत विहार बिनोद बिपुल बिधि प्रिय प्राणेश्वर ॥१५॥
येहि से सब सहचरी एक रस अति सुख पावैं।
पर यह रहस ललाम पिया काहुहिं न जनावैं ॥१६॥
कहत सूत सुख पगे यहू लीला रघुवर की।
है गन्धर्वी कला कुशल येहि में अति छवि धर ॥१७॥
जासु प्रभाव अनेक रूप धरि रमत रसिकवर।
बहु प्रतिबिम्ब समान लहत सुख स्वाद उमगि उर ॥१८॥
पर वे रूप अनेक सत्य सुठि सुखद रसाला।
भ्रम दायक नहिं कदा यथा रघुवर नृप लाला ॥१९॥
येहि लीला के प्रथम कदा पिय ने अवसर लहि।
प्राण प्रिया से बचन मधुर रसमय येहि बिधि कहि ॥२०॥

Scanned by CamScanner

हे मम जीवन मूरि प्राण वल्लभे सुखद वर।
ये सब बाल रसाल शील सौन्दर्य सरल तर ॥२१॥
बहु उत्तम स्थान माहिं प्रगटीं सुकुमारी।
जो पै आज्ञा होय आपकी प्राण पियारी ॥२२॥
तो इन को भी देहुँ सरस सुख स्वाद मधुर तर।
अंगालिंगन चुम्बनादि हिय अति उमंग भर ॥२३॥
जो नहिं आयसु होय आप की कृपा मयी हिय।
तो केवल तव साथ रमौ निश्चय जानिय जिय ॥२४॥
सुनि पिय के इसि बचन कृपामयि अति उदार उर।
बोलीं श्री मैथिली बयन मृदु मंजु मधुर तर ॥२५॥
अति प्रसन्न मन कहहिं सुनहु हे प्राण पियारे।
रति रस लम्पट लाल प्रेम पूरित मन हारे ॥२६॥
यह स्वाभावाबिक नाथ अपर राजन की रानी।
तुम्हरी दासिन सरिस स्वाद सुख नहिं अनुमानी ॥२७॥
जो सुख सम्पति भोग रावरी दासी पावैं।
अपर महारानियाँ वाहि हित चाह बढ़ावैं ॥२८॥
पर तव कृपा कटाक्ष बिना पावत नहिं कबहूँ।
यह सब तो अति प्रियाँ रावरी जानैं हमहूँ ॥२९॥
जग की रानिन केर भोग सुख सम्पति सारी।
नाशवान सब भाँति सुनिय पिय रास बिहारी ॥३०॥
तुम्हरी दासिन केर भोग सम्पति सुख सारे।
नित-नित नव-नव बढ़त बिचारिय राजदुलारे ॥३१॥

Scanned by CamScanner

येहू जानत सकल लोक में सब कोइ प्यारे।
तुम्हरी दासिन केर भोग सुख स्वाद अपारे ।।३२।।
देव राज की प्रिया शची देवी नित ध्यावै।
पर तव कृपा कटाक्ष बिना वह भी नहिं पावै ।।३३।।
पुनि तव नाम उदार अमित गुण निधि सब लायक।
राम परम अभिराम प्रेम वर्धक सुख दायक ।।३४।।
जो सब जग में रमै स्वयं में सबहिं रमावै।
वह ही सम्यक भाँति रमयिता राम कहावै ।।३५।।
अखिल लोक अभिराम राम अस शब्द सुहावन।
याते हे रसिकेश श्याम सुन्दर मन भावन ।।३६।।
ये सब तो तव प्रियाँ स्वकीया रति रस पागीं।
सेवहिं चरण सरोज निरन्तर अति अनुरागीं ।।३७।।
याते जीवन प्राण रसिक चूड़ामणि छबि धर।
नायक नवल किशोर स्वजन मन हर प्रमोद कर ।।३८।
परिकर रति रस दान रास रसिया रस सागर।
दीजिय सब सुख स्वाद प्राण वल्लभ नव नागर ।।३९।।
गाढ़ालिंगन चुम्बनादि सुठि सुखद बिहारा।
कीजिय सब के संग रंग भरि नृपति कुमारा ।।४०।।
पुनि यह भी जग विदित रावरो सुख क्षण केरो।
तुलै न सुर पति संग सु यश तव बिशद घनेरो ।।४१।।
तुम्हरो क्षण सुख गरुअ हरुअ सुरपति सुख सारो।
अति लघु सुख सब मोक्ष केर श्रुति शास्त्र पुकारो ।।४२।।

Scanned by CamScanner

सोइ सुख सब विधि सुलभ इनहिं मेरे सँग प्यारे ।
याते तजि संकोच सबनि को राज दुलारे ॥४३॥
दीजिय सब सुख स्वाद महाँरस रंग रँगाई ।
पगि इनके अनुराग सबनि अभिलाष पुजाई ॥४४॥
येहि बिधि भा सम्बाद कदा प्रथमहिं दोउ माहीं ।
पुनि बीते कछु काल भुलानी सिय पिय नाहीं ॥४५॥
येहि से झुलन विहार माहिं तव सखियन सँग पिय ।
रमत प्रकाश सुरूप देत सुख स्वाद हर्षि हिय ॥४६॥
अङ्गलिङ्गन चुम्बनादि सब अचलन कीना ।
अतिसौहार्द समेत सबनि परमानँद दीना ॥४७॥
स्वयं सिया के साथ परस्पर गल भुज धारी ।
झूलत राजकिशोर मोद मन्दिर सुख कारी ॥४८॥
झूलत प्रेमावेश युगल दम्पति रस पागी ।
श्री मैथिली उदार पाय श्रम अति अनुरागी ॥४९॥
सिथिल भये अँग सकल धारि पिय अंक माहिं शिर ।
सोई अति सुकुमारि स्वपन देखा विचित्र फिर ॥५०॥
जेतीं नव नायिका झुलैं झूलन सुकुमारी ।
तेते रूप बनाय सबनि सँग रास बिहारी ॥५१॥
झूलत प्राण अधार परस्पर कण्ठ लगाई ।
करत केलि कमनीय सखिन रस रंग रँगाई ॥५२॥
श्री अवधेश कुमार सखिन सँग अति रस पागे ।
आलिंगन करि चूमि बदन अति पिय अनुरागे ॥५३॥

Scanned by CamScanner

जागीं जब मैथिली समुझि पिय को व्यवहारा ।
यद्यपि सरल स्वभाव तदपि भो क्रोध अपारा ॥५४॥
मन में करैं बिचार नाथ ने यह रस लीला ।
हम से छिप कर कीन यदपि सुन्दर सुख सीला ॥५५॥
निजपितु को उपदेश सुरति करि जनक दुलारी ।
लखि पिय को व्यवहार हृदय में भईं दुखारी ॥५६॥
कहे पिता इमि वयन तुम्हारो सुख विहार कर ।
विपुल भोग रस स्वाद सतत तुम्हरेहि अधीन कर ॥५७॥
पिय सँग सिंहासनासीन को शुभ अधिकारा ।
अन्य नायिकहिं नहीं तुमहिं तजि किसी प्रकारा ॥५८॥
तुम्हरी अनुमति बिना काहु नारी सँग रघुवर ।
नहिं करि सकैं बिहार मधुर लीला पिय धवि धर ॥५९॥
पिय को भी अस कहेउ सिंहासन पर तव संगा ।
बैठें श्री मैथिली सकृत रँगि तव रस रंगा ॥६०॥
इनकी अनुमति बिना अपर कोई वर नारी ।
करै न बिपुल विहार भोग लीला रस कारी ॥६१॥
इन पर तव अधिकार सकल बिधि तुम पर इन को ।
तेहि सँग रमिये आप देहिं अनुमति यह जिन को ॥६२॥
पर मम आयसु बिना राज रस लम्पट प्यारे ।
करत बिहार बिनोद बिबधि बिधि राजदुलारे ॥६३॥
अन्य तियन सँग रमण केर इच्छा पिय तन में ।
करि अनुभव येहि भाँति प्रिया पायो दुख मन में ॥६४॥

Scanned by CamScanner

यद्यपि शान्त स्वभाव सकल सखियन सुख दीजै ।
कहा कदा येहि भाँति सबनि अति रस बस कीजै ।।६५।।
तदपि मधुर रस भरीं परम प्रेमामृत पागीं ।
भूलि गईं सब बात सकृत पिय में अनुरागीं ।।६६।।
प्रेमावेश विशेष जाहि होवे जब कबहूँ ।
जानत हू सब बात भूलि जावै जन तबहूँ ।।६७।
यद्यपि वाला बृन्द गोत्र लघुतर सब आहीं ।
तदपि मैथिली रमण संग सुख लहि हर्षाहीं ।।६८।।
लहि पिय को अति प्यार सकल ललना समुदाई ।
उत्तम कुल उद्भवा तियन से अधिक लखाई ।।६९।।
निज महान सौभाग्य केर सब करैं बड़ाई ।
सो श्रवणन सुनि सीय निरखि पिय की चतुराई ।।७०।।
निज मन करैं बिचार मोर कुल गोत्र न्युन करि ।
बिलसत सब वर वाम पिया सँग अति उमंग भरि ।।७१।।
यद्यपि अतिसय शान्त चित्त मिथिलेश कुमारी ।
तदपि स्नेह अति मुग्ध बढ़ी क्रोधानल भारी ।।७२।
यों सोचा मैथिली पिता मम परम उदारा ।
श्री वारह भगवान जगत मंगल कर्त्तारा ।।७३।।
माता श्री माधवी सकल सुर श्रेष्ट भ्रात मम ।
मंगल सब जग सुखद अपर कोइ नहिं जिनके सम ।।७४।।
श्री कमला अरु देव मयी श्री सरस्वती वर ।
नाहिन मेरे सदृश अपर कैसे समता कर ।।७५।।

Scanned by CamScanner

यदि सोचिय माधुर्य माहिं तो विधि सम ज्ञानी ।
ध्यान समाधी निष्ठ तत्वदर्शी गुण खानी ।।७६।।
श्री शिव सरिस सुजान सकल विधि पिता हमारे ।
चक्रवर्ति नृप सुवन भूषण सुकुमारे ।।७७।।
प्रीतम प्राण अधार राम सुख धाम रसिक वर ।
पटरानी तिन केर अहौं मैं सब विधि शुचि तर ।।७८।।
अर्ध सिंहासन केर सुदृढ़ अधिकार हमारे ।
पितु ने दीनो मोहिं वाहि जानत पिय प्यारे ।।७९।।
क्या पिय को यह उचित मोर मर्याद मिटाई ।
रमत अपर तिय संग राजनन्दन हर्षाई ।।८०।।
अस निज मन में सोचि करन मिस राजकिशोरी ।
गमनी एक निकुंज माहिं मृदु चित अति भोरी ।।८१।।
निज क्रोधानल काहिं लीन हिय माहिं छिपाई ।
तदपि समुझि अपमान दृगन छाई अरुणाई ।।८२।।
घूमन लागे नयन वयन मुख से न उचारे ।
उर में अति आमर्ष जानि लम्पट निज प्यारे ।।८३।।
अकस्मात एक संग पियै तजि चलीं किशोरी ।
शान्त चित्त सब सखी चली मिलि सिय की ओरी ।।८४।।
समझ गईं सब बात प्रिया पिय से रिसियाई ।
अपर नायिकन संग मदन आतुर रघुराई ।।८५।।
अतिसय चंचल नयन अरुण तर लम्पट प्यारे ।
बिहरत सखियन संग सकल संकोच बिसारे ।।८६।।

Scanned by CamScanner

याते हो अति रुष्ट गईं स्वामिनि दुख मानी ।
सिय हिय की सब बात सकल सखियन ने जानी ॥८७॥
निज दिशि आवत देखि सखिन बोलीं सिय प्यारी ।
जाओ तजि मम साथ सकल सुनि बात हमारी ॥८८॥
अस कहि दीनी रोकि वहीं रुक गईं दुखित मन ।
सकल सखी अति खेद सहित मुर्झाय गईं तन ॥८९॥
श्री सुभगा अस नाम एक सखि परम सयानी ।
प्यारी सरिस स्वभाव शील गुण निधि सुख खानी ॥९०॥
सोइ गमनी सिय संग अपर सखि परम दुखारी ।
आईं प्रीतम पास खेद युत मोद बिसारी ॥९१॥
एक-एक को मुख लखैं बचन मुख से न उचारैं ।
पावहिं अति सन्ताप पिया बिधु बदन निहारैं ॥९२॥
बोलीं पिय से वचन सखीं हे प्राण पियारे ।
जीवन धन चितचोर रसिक वल्लभ मन हारे ॥९३॥
तव प्राणाधिक प्रिया नाथ तुम से रिसियाईं ।
गवनी कुंज मझार सुनत पिय अति घबराई ॥९४॥
जेहि रस क्रीड़ा मगन रहे वाको तजि प्यारे ।
पायो अतिसय खेद हृदय में राजदुलारे ॥९५॥
तब बोली कोइ सखी प्राण वल्लभ जीवन धन ।
तुम्हरी प्रिया प्रवीण क्षुभित भइं किंचित निज मन ॥९६॥
यदि कहिये हृदयेश क्रोध हम को न जनायो ।
स्वामिनि परम उदार कोप मन माहिं छिपायो ॥९७॥

Scanned by CamScanner

वे मिथिलाधिप लली मैथिली अवनि किशोरी।
सब बिधि परम प्रवीण रूप गुण निधि रस बोरी ॥९८॥
याते मुद्रा क्रोध केर उनने न दिखाई।
करि तुम से मन मान कुंज में गईं छिपाई ॥९९॥
आपहु हैं अति दक्ष विचारो निज मन माहीं।
कीनो काहे मान प्रिया ने यदि दुख नाहीं ॥१००॥
यदि यों कहिये नाथ तुमहिं ने प्रियै सिखाई।
दीनो "सीताशरण" मान मोसे कर वाई ॥१०१॥
दो०–तो हे रसिक नरेश पिय, प्रेमिन प्राणाधार।
सीताशरण न दोष मम, देखिय आप बिचार ॥३॥
अन्तरज्ञ सर्वज्ञ आप हो दृगन सितारे।
उरकी जानन हार स्वजन पालक मन हारे ॥ १ ॥
येहि प्रकार सुनि सखिन बचन बोले पिय नागर।
सुनहु सकल सखि वृन्द प्रेम पूरति छबि आगर ॥ २ ॥
प्रथम प्रिया ढिग जाय करो निश्चय मन माहीं।
क्रोध युक्त अथवा प्रसन्न आनन्द समाहीं ॥ ३ ॥
सब बिधिपता लगाय शीघ्र अति मम ढिग आना।
प्रिया हृदय की बात सकल हम को बतलाना ॥ ४ ॥
करिहैं हम कर्तव्य बहुरि जो उचित मोद कर।
मनिहैं जिमि माननी मनैइहैं उनहिं शीघ्र तर ॥ ५ ॥
सुनि पिय के इमि वचन प्रेम रस सने मधुर वर।
गईं सखी दो तीन लिये सुठि कन्ज माल कर ॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

पहुँचि मैथिली पास चरण पंकजन मझारी।
करि प्रणाम कर जोरि मधुर प्रिय गिरा उचारी ॥ ७ ॥
कृपामयी हे देवि देव जीवन धन रघुवर।
भेजी यह वर माल आप को अति सनेह भर ॥ ८ ॥
सुनि सखि की प्रिय गिरा कहैं मिथिलेश किशोरी।
हमहिं न चाहिय माल जाहु पिय पास बहोरी ॥ ९ ॥
यह माला ले जाहु एक माला मम लेकर।
देवहु प्रीतम काहिं युगल माला प्रमोद भर ॥ १० ॥
मम दिशि ते यह बात पिया को कहेउ बुझाई।
मैने स्वयं उतारि सुमन रचि माल बनाई ॥ ११ ॥
जेहि तिय में तव प्रेम अधिक होवे तेहि दीजिय।
रमि रमाय निज संग वाहि से सब सुख लीजिय ॥ १२ ॥
माला चाहिय और अगर तो स्वयं बनाई।
कलह शान्ति के हेतु देहुँगी मैं पठवाई ॥ १३ ॥
मो सम माला कार आपको सुलभ न होइहैं।
माला मेरे सदृश आपको जौन बनैइहैं ॥ १४ ॥
याते मैं निज करन सुमन चुनि माल बनाई।
अति सुन्दर मन रमन दिहौं तुम को पठवाई ॥ १५ ॥
अपनी प्यारी काहिं आप प्रमुदित पहिराई।
रमिये वाके संग रंग भरि हिय हर्षाई ॥ १६ ॥
सुनि प्यारी के बयन सखी दोउ माल उठाई।
गमनी प्रीतम पास चरण पंकज शिर नाई ॥ १७ ॥

Scanned by CamScanner

हाल सुनायो सकल प्रिया को क्रोध श्रवण करि ।
पिय मन अति दुख भयो अगोचर बचन सोंच परि ॥१८॥
हिय मधि करैं बिचार कौन अपराध हमारो ।
अति कोमल चित प्रिया क्रोध उर में इमि धारो ॥१६॥
अन्धकार भ्रम मोह बिनाशक भानु समाना ।
यद्यपि श्री रघुवीर धीर सब भाँति सुजाना ॥२०॥
तद्यपि प्रेमाबेश हृदय अतिसय घबरावत ।
भरेउ स्वेद तन माहिं चित्त घूमत अकुलावत ॥२१॥
मुर्छित भैं हृदयेश प्रिया बिन राजदुलारे ।
उत्तम सुख अरु भोग रोग सम लागत सारे ॥२२॥
पुनि कछु हो प्रतिकस्थ सखिन सन कहत रसिक वर ।
अस को सखी प्रवीण निकारै भ्रम सिय हिय कर ॥२३॥
जो प्यारी उर केर प्रवल भ्रम पुंज नशावै ।
सुदृढ़ प्रतिज्ञा करै मोर सन्मुख सो आवै ॥२४॥
जो करिहै यह कार्य वाहि निज सर्वस दैइहों ।
रस मय भाव सु केलि योग्य सब भाँति बनैइहों ॥२५॥
सो मम यश की पात्र होयगी सबसे प्यारी ।
देवै प्रियै मिलाय बिबिधि वर यत्न सँवारी ॥२६॥
सुनि पिय के अस बचन सकल नायिका नवीनी ।
बोलीं बचन सनेह सनी नय विज्ञ प्रवीनी ॥२७॥
हे प्रीतम चित चोर नीति पंडित सु शील तर ।
कहे नाथ जो बयन चयन प्रद मधुर सुखद वर ॥२८॥

Scanned by CamScanner

प्यारी जिय की जानि हाल मो कहँ बतलैइहैं।
सो मम अति प्रिय और कृपा मेरी अति पैइहैं ॥२९

आपहिं कहिये भला तिया के जो स्वभाव गुन।
जानै भली प्रकार बुद्धि परिवर्तन हित मन ॥३०॥

करै प्रतिज्ञा प्रबल कवन अस नारि सयानी।
निज मति गति अनुसार यत्न करिहैं सुख मानी ॥३१॥

हे राजेन्द्र कुमार नराधीशाधि सुवन वर।
आप समर्थ उदार यत्न करिये बिशेष तर ॥३२॥

निज बुधि बल अनुसार जाय हम सकल मनैइहैं।
मान जायँ यदि प्रिया तुरत तव ढिंग लैअइहैं ॥३३॥

नहिं मानै यदि प्रिया कवन वश चलै हमारा।
जीवन प्राण अधार करिय मन माहिं बिचारा ॥३४॥

येहि बिधि कहि वर बचन पियैसन्तोष बँधाई।
दूती बनि कोइ सखी चतुर स्वामिनि ढिग जाई ॥३५॥

बोली बचन बिनीत कहिय हे राज कुमारी।
दृग निज आश्रय तजै व आश्रय दृगन बिसारी ॥३६॥

क्या तुमने अस सुना श्रवण तो मोहिं बताइय।
शक्तिवान के बिना शक्ति क्या कछु कर पाइय ॥३७॥

कौन प्रतिष्ठा लहै शक्ति निज शक्ति वान बिन।
शक्तिवान के बिना शक्ति कहँ रहै कहिय किन ॥३८॥

अँग अरु अँगी केर होइ केहि भाँति बिरोधा।
आज आप ने कीन मान मन मनहुँ अबोधा ॥३९॥

Scanned by CamScanner

हे श्री सीते स्वयं सिद्ध तेहि लगि बहु साधन।
करै वृथा सब क्रिया योग जप तप अवराधन ॥४०॥
अति उत्तम पतिव्रता आप के वश प्रीतम नित।
निर्विकार निर्दोष सुधा सागार उदार चित्त ॥४१॥
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषण रघुनन्दन।
प्रेमिन प्राणाधार सतत तव रति रस रंजन ॥४२॥
उनसे कर यह मान लाभ क्या पैइहो प्यारी।
तव रस बश नित रहत प्राणधन लखौ बिचारी ॥४३॥
मान करैं वे तिया जासु नायक बश नाहीं।
वाके बश पिय होहिं न कछु संसय येहि माहीं ॥४४॥
तव प्रीतम अति सरस सरल नित रँगि तुम्हरे रँग।
करत केलि कमनीय मोद युत सब सखियन सँग ॥४५॥
उनहिं लागि येहि भाँति परिश्रम व्यर्थ उठाना।
तुम्हरे बिन पल रहि सकैं पिय रसिक सुजाना ॥४६॥
सुनि इमि दूती बचन अनुचरी सिय की कोई।
बोली सहित सनेह सुनहु दूती जस होई ॥४७॥
बृद्धावस्था माहिं पुरुष जर-जर हो जावत।
बोझा सम निज अंग वाहि अति दुखद जनावत ॥४८॥
पहले था अति प्रेम लगत थे अति उपकारी।
पुनि घटि जावत प्रेम भार सम होवत भारी ॥४९॥
ऐसेहि सखि येहि लोक माहिं कोइ-कोई जन आहीं।
पूर्व सनेहिन त्यागि नये में रमि हर्षाहीं ॥५०॥

Scanned by CamScanner

ऐ दूती मैथिली केर अप्रिय करके पिय।
करत अन्य में प्रीति असित आनन्द चहत हिय ॥५१॥
सो मिलिहै न कदापि करैं किन कोटि उपाई।
तुम से हू यह मान कदा छुटिहै न छुटाई ॥५२॥
प्यारी के अतिरिक्त अन्य में पिय रति मानी।
तो इनको यह मान उचित सब विधि सुख खानी ॥५३॥
तुम अनुचित क्यों कहो प्रिया पग में बहु ईश्वर।
सादर करत प्रणाम कहावत जो जगदीश्वर।५४॥
तब क्यों राजकुमार स्वयं पग परैं न आई।
परिहैं आय अवश्य अन्य विधि कछु न बशाई ॥५५॥
अमृत मण्डल चन्द्र प्रभा बिन छबि नहिं पावत।
वाकी शोभा सतत प्रकाशहिं से दर्शावत ॥५६॥
समझो येही भाँति चतुरि अपमानहुँ काहीं।
होत जासु अपमान तातु प्रकाश रह नाहीं ॥५७॥
होत अनादर पात्र सबनि को जेहि अपमाना।
होवै कवनौ भाँति कहैं बुधि बन्त सुजाना ॥५८॥
बड़ेहु जनन की सभा माहिं लघु जन्तु मान की।
रच्छा सब बिधि करै देत बाजी स्वप्रान की ॥५९।
जो राखै निजमान सोइ गौरव गुण केरो।
जानै भली प्रकार लहै सुखस्वाद घनेरो ॥६०॥
मम स्वामिनि मैथिली रूप निधि राजकिशोरी।
जग में बिधि ने इनहिं अमित गुण सिन्धु सजोरी ॥६१॥

Scanned by CamScanner

सकल गुणन की खानि रूप रस निधि इन काहीं ।
सर्वेश्वरी सुमान वती बिरची बिधि आहीं ॥६२॥
भये अनादर अवसि मान रखिहैं क्यों नाहीं ।
क्या पिय आदर अपर तिया इन सम होइ जाहीं ॥६३॥
लौह पात्र क्यों कदा स्वर्ण समता करि पावै ।
स्वाभाविकै अमूल्य हेम सब के मन भावै ॥६४॥
प्यारी सखि की बात श्रवण करि दूती मुद भर ।
बोली जग में तिया होय अथवा कोई नर ॥६५॥
अपने गुण से निश्चय सबसे मान प्राप्त कर ।
पावत गौरव अमित परम आनन्द हृदय भर ॥६६॥
लोक प्रतिष्ठा मान हेत कोइ कोटि उपाई ।
करै व्यर्थहि क्रोध सकृत श्रम ही सो पाई ॥६७॥
यदि प्यारी गुणवान अहैं तो अवसि रसिक वर ।
दैइहैं आदर इनहिं हृदय उमगाय प्यार भर ॥६८॥
तब फिर क्यों यह मान रूप करि क्रोध पिया से ।
अतिश्रम रहीं उठाय व्यर्थ दुख मानि जिया से ॥६९॥
सुनि दूती के बचन प्रिया सखि कहै रिसाई ।
ऐ दूती क्यों यहाँ व्यर्थ बकवाद बढ़ाई ॥७०॥
उठ चल यहाँ से भाग अरी तू गुण क्या जानै ।
कोई परम गुणज्ञ गुणी ही गुण पहिचानै ॥७१॥
तू सब बिधि किंकरी कार्य साधन हित आई ।
व्यर्थहिं अपनी बुद्धि चपलता यहाँ दिखाई ॥७२॥

Scanned by CamScanner

प्यारी के गुण सकृत प्राण प्रीतम ही जानत ।
वह ही देइहैं मान सतत जो नित मनमानत ॥७३॥
सुनि सखि के इमि वयन हृदय में परम लजाई ।
दूती चन्द्रासखी पिया ढिग गई सिधाई ॥७४॥
बोली पिय से बचन प्रिया ने तुम में प्यारे ।
बतलायो बड़ दोष एक हे प्राण अधारे ॥७५॥
अन्य कुमारिन सरिस आप ने हम को माना ।
यह अवश्य ही दोष नाथ में रसिक सुजाना ॥७६॥
हे बिशेष वर बुद्धि प्राण जीवन सुजान तर ।
हम ने तुम से कहे प्रिया जू केर बचन कर ॥७७॥
अब जो जानिय उचित करिय सोई कृत प्यारे ।
तुम विशेष वर बुद्धिवान गुण रूप उजारे ॥७८॥
सुनि दूती के वयन कमल दल लोचन रघुवर ।
श्री विमला से कहे प्रेम युत बचन मधुर तर ॥७९॥
जाकर प्यारी पास दशा मेरी बतलाइय ।
करि बहु यत्न मनाय शीघ्र मेरे ढिग लाइय ॥८०॥
सुनि पिय बानी सरस चलीं विमला सिय ओरी ।
निकट जाय पद वन्दि कहैं कर जोरि वहोरी ॥८१॥
जो कछु प्रीतम प्रिया रोष नाशन उपाय वर ।
बतलाये सोइ कहन लगीं हिय अति सनेह भर ॥८२॥
हे श्री युत मैथिली आप पिय की महरानी ।
कीजिय स्वयं बिचार नाथ को सुख रस दानी ॥८३॥

Scanned by CamScanner

भला कहीं प्रतिबिम्ब दोष बिम्बा में जाई।
ऐसा कदा न होय वृथा क्यों रोष बढ़ाई ॥८४॥
कीन्हों पिय से मान आप ने प्राण पियारी।
उनकी जीवन मूरि सकल बिधि अवनि कुमारी ॥८५॥
जिमि अनेक घट भरे वारि सब घटन मझारी।
दर्शावत प्रतिबिम्ब भानु कर तेहि अनुहारी ॥८६॥
जब कछु कारण पाय हिलै जल भानुबिम्ब तब।
कंपत तेहि के साथ आप देखिय बिचारि अब ॥८७॥
क्या कंपत प्रतिबिम्ब सूर्य भी कंपन लागत।
ऐसे ही हे प्रिये आप में पिय अनुरागत ॥८८॥
भानु सदृश प्राणेश व्योम सम तव उर लागे।
घट ज्यों बहु नायिका संग पिय जिमि अनुरागे ॥८९॥
सबको हिय अति विमल परत प्रतिबिम्ब पिया को।
अंगालिंगन आदि क्रिया करि सबनि जिया को ॥९०॥
देवत परमानन्द सबहि रस रंग रँगाई।
पर उनका सुख स्वाद पिया तक केहि बिधि जाई ॥९१॥
जल को कंपन दोष गगन गत रवि में नाहीं।
तथा तियन स्पर्श दोष पिय में न समाहीं ॥९२॥
बहुरि बात एक और बिचारिय राजदुलारी।
कोई देखै स्वप्न वस्तु चुरि गई हमारी ॥९३॥
क्या जागे पर दण्ड चोर को देवत कोई।
इसी भाँति हे प्रिये स्वप्न तुम देखा होई ॥९४॥

Scanned by CamScanner

प्रीतम तव उर लगे कहो तुम रमत अन्य सँग ।
मानत मोसे अधिक रँगत वाही के रस रँग ॥९५॥
कहिये जग कर धनिक चोर को दण्ड देन हित ।
करै प्रयास अपार बनिज धन तजै सोचि चित ॥९६॥
पाय अन्य स्पर्श भयो दूषित मेरो धन ।
रहा न मेरे योग्य त्यागिहौं याहि मुदित मन ॥९७॥
तो कहिये वह धनिक अज्ञ कितनो कहलाइय ।
येहि बिधि हे लाड़िली समझ अपने मन जाइय ॥९८॥
इसी भाँति मन माहिं काहु की बस्तु चुरावै ।
पर प्रतच्छ में नाहिं बस्तु हित हाथ बढ़ावै ॥९९॥
वाहि कहै को चोर दण्ड भागी नहिं होई ।
येहि बिधि 'सीताशरण' लखा तुम सपना सोई ॥१००॥

दोहा०—येहि विधि तुम्हरे प्राणधन, अथवा अपर सु वाम ।
दण्ड योग्य सीताशरण, नहिं कोइ हे छबि धाम ॥४॥

लखा दृष्टि से होय अगर नायिका पियहिं कोइ ।
अथवा पिय ने लखी होय नागरी दृष्टि सोइ ॥ १ ॥
नहीं दण्ड के योग न त्यागन योग पियारी ।
कीजिय स्वयं बिचार आप ही राजदुलारी ॥ २ ॥
इमि कोइ पिय में बचन भ्राँति को दोष लगावै ।
झूठी कहै बनाय सत्य सो किमि हो जावै ॥ ३ ॥
पुनि औरौ एक बात मनोरम पिय को रूपा ।
निरखि बिवश मन बिकत श्यामली मूर्ति अनूपा ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

तन धारी अस कौन पिया छबि लखि न बिकाई ।
रमण करन रुचि करै न जो हिय में उमगाई ॥ ५ ॥
अबलन की क्या बात पुरुष पिय रूप निहारी ।
ललकि चहत हिय लगन आपनो सर्वस वारी ॥ ६ ॥
तो कहिये कोइ वाम पिया छबि लखि ललचावै ।
तो उस का क्या दोष दण्ड भागी न कहावै ॥ ७ ॥
यथा अग्नि को देखि द्रवत घृत पुनि वहि जावै ।
कवन दोष घृत केर हमै कोइ यह समझावै ॥ ८ ॥
सौरभ हित ललचाय मधुप पुष्पन ढिग जावत ।
कौन बुलावत उनहिं तदपि नहिं चोर कहावत ॥ ९ ॥
सूर्य कान्तमणि रबिहिं बिलोकत ही द्रवि जावै ।
बुद्धि मान मणि केर दोष कोई न बतावै ॥१०॥
यह स्वाभाविक वृत्ति इननि की सब कोइ जानत ।
याते किसी प्रकार दोष इन में नहिं मानत ॥११॥
तथा निरखि पिय काहिं बिकैं नायिका नवीनी ।
तन मन सर्वस वारि चहैं प्रीतम रस भीनी ॥१२॥
प्रीतम काहु न लखैं पिया को लखै न कोई ।
देखै जो पिय काहिं बिबस इन के नहिं होई ॥१३॥
इमि सोचैं यदि आप पिया सँग रमै न कोइ तिय ।
करैं यत्न येहि लागि विचारिय तो अपने हिय ॥१४॥
अपर तियन मन केर आप को क्या अधिकारा ।
पिय सँग रमण न देहु कीजिये स्वयं बिचारा ॥१५॥

Scanned by CamScanner

जब पिय छवि माधुरी त्रिवस करि तियन लुभावै ।
बरबस मन की वृत्ति आपने माहिं लगावै ॥१६॥
यह पिय छवि वाहुल्य तियन को लेश न दोषा ।
याते करुणा मयी करिय मन में नहिं रोशा ॥१७॥
यदि येहि लगि बहु यत्न करिय केवलश्रम पाइय ।
प्राण प्रिये कछु और आप के हाथ न आइय ॥१८॥
अहो खेद की बात परम आश्चर्य जनावै ।
यदि कोइ नव नायिका पिया छबि लखि ललचावै ॥१९॥
पुनि निज हृदय निकुंज माहिं पिय संग रमण करि ।
पावै परमानन्द परम सुख स्वाद मोद भरि ॥२०॥
बहु बिधि रमण कराय महाँ सुख स्वाद चखावै ।
पिय को यामें दोष लाड़िली कौन कहावै ॥२१॥
स्वयं रसिक शिर मौर रमत तुम्हरे संग माहीं ।
त्यागि तुमहिं पल एक कदा कहुँ जावत नाहीं ॥२२॥
पिय प्रति बिम्बहिं ध्यान माहिं यदि कोइ सुकुमारी ।
आकर्षण करि रमै तासु सँग परम सुखारी ॥२३॥
वाको कौन निषेध करै ऐसा नहिं कीजिय ।
अथवा सम्मत कौन देय इमि नित सुख लीजिय ॥२४॥
मुख से कहने योग्य बात दोउ में कोइ नाहीं ।
याते हे मैथिली दोष नहिं प्रीतम माहीं ॥२५॥
पुनि पिय को श्रीराम नाम जो सबहिं रमावै ।
रमण करै सब माहिं सतत सोइ राम कहावै ॥२६॥

Scanned by CamScanner

जब वे प्राण अधार रसिक चूड़ामणि मनहर।
भये मनोमय रूप सर्वसाधारण सुख कर ॥२७॥
सब में एक समान व्याप्त जब रूप सु छबि धर।
तब उन में को दोष आप कहिये बिचार कर ॥२८॥
हाँ यह बात अवश्य भाव उत्कट जेहि केरो।
सो निज भाव प्रभाव लहत सुख स्वाद घनेरो ॥२९॥
जैसे मन्थन किये काण्ठ से प्रगटै आगी।
तथा प्रगट पिय होत जानि निज अति अनुरागी ॥३०॥
प्रगटि काण्ठ से अग्नि बहुरि सब काम बनावै।
तथा प्रगट पिय भये स्वजन अभिमत फल पावै ॥३१॥
पूर्ण मनोरथ करत सकल विधि प्राण अधारे।
तदपि विषमता रूप दोष पिय में न कदारे ॥३२॥
पुनि हे सखि स्वामिनी आप तो संतत पिय को।
रखतीं हृदय लगाय भाव सब जानहु जिय को ॥३३॥
कहूँ जान नहिं देहु तबहुँ क्या आप नजानहु।
व्यर्थहि दोष लगाय क्रोध करि अति दुख मानहु ॥३४॥
जिमि कोइ मूढ़ा कण्ठ लगी मणि भ्रम बश होई।
जहँ तहँ खोजत फिरै कौन लीला तुम्ह सोई ॥३५॥
है स्वभाव अति सरल रावरो राजकिशोरी।
भोला पना विशेष रहौ पिय प्रेम विभोरी ॥३६॥
याते हे स्वामिनी पिया आनन्द सिन्धु सम।
तुम नित नवल स्वरूप पगीं पिय प्रेम अनूपम ॥३७।

Scanned by CamScanner

याते हे मैथिली व्यर्थ यों क्लेश उठाना ।
आप न येहि के योग्य उचित नहिं कहैं सुजाना ।।३८।।
भरीं परम सौभाग्य आप नित नव रस लीला ।
कौतुक केलि कलोल परम मन हर सुख शीला ।३९।।
धारण सन्तत करहु रहत तव बश प्रीतम नित ।
सुनि तुम्हरो यह मान प्राण वल्लभ कोमल चित ।।४०।।
पाय रहे अति क्लेश व्यर्थ में मान बढ़ाई ।
प्राणनाथ को रहीं महाँ दुख सिन्धु डुबाई ।।४१।।
तुम से कइ गुण अधिक क्लेश पावत जीवनधन ।
यह नहिं तुम को उचित करिय विचार अपने मन ।।४२।।
हे करुणामयि देवि सतत हम सब यह चाहैं ।
तुम दोउ के सुख स्वाद सिन्धु में नित अवगाहैं ।।४३।।
भूमण्डल से ब्रह्मलोक तक तुम दोउ केरे ।
नित नव-नव सुख स्वाद बढ़ैं बहु भाँति घनेरे ।।४४।
जो ऐसा नहिं चहै अहै सो अति दुर्भागी ।
अन्धी होवै जन्म-जन्म तव प्रीति न पागी ।।४५।।
श्री विमला के बचन सुनत इमि सिय की दासी ।
लहि हिय को संकेत दृगन निज बचन प्रकाशी ।।४६।।
बोली हे प्रिय देवि ठीक तुम ने बतलायो ।
यों कहकर हिय केर क्लेश क्या समन करायो ।।४७।।
तुमदूती सब भाँति वाक्य पण्डिता चतुर्वर ।
कीजै किन्तु बिचार कथे क्या ज्ञान हृदय कर ।।४८।।

Scanned by CamScanner

काहू को दुख मिटत होय तो मोहिं बताइय ।
जो पै दूर न होय वृथा क्यों बात बनाइय ॥४९॥
जिमि केहु के तनमाहिं होय फोड़ा अति दुख कर ।
वासे यदि कोइ कहै भूल जाइय अनन्द भर ॥५०॥
यह फोड़ा नहिं अहै तुम्हारो भ्रम अज्ञाना ।
याही से येहि भाँति लहत तुम क्लेश महाना ॥५१॥
तो क्या सुनि अस बचन ठीक फोड़ा हो जावै ।
बाके अन्तः करण केर दुख सकल नशावै ॥५२॥
ऐसा कदा न होय बहुरि एक बात सयानी ।
निज हिय लखो बिचार बनति हो अतिसय ज्ञानी ॥५३।
यदि संदेशा मात्र दिये कारजबनि जावै ।
तो काहू से मिलन हेत कोई क्यों आवै ॥५४॥
तुम लाईं संदेश हमहुँ संदेश पठावैं ।
पिय से कहना जाय वहाँ ही वे सुख पावैं ॥५५॥
निज मन लेवैं सोच मिल गयीं हम से प्यारी ।
देह समागम केर काम क्या करहु बिचारी ॥५६॥
जो है अर्थ पुमर्थ वही केवल अच्छर नहिं ।
केवल शब्द न होत अर्थ कारी जग में कहिं ॥५७॥
जिमि कोइ अस कह देय घड़ा से जल ले आना ।
क्या घट बिन जल मिलत बिचारो तुम मति माना ॥५८॥
इस को यह तात्पर्य जहाँ घट में जल होई ।
तहँ घट से जल देहु कहत पावै सब कोई ॥५९॥

Scanned by CamScanner

जहाँ न घट नहिं वारि तहाँ कोइ किमि जल पावै।
करि-करि विपुल प्रयास वृथा श्रम मात्र उठावै ॥६०॥
याही बिधि हे सखी प्राण जीवन धन मनहर।
चाहत करन बिहार सखिन सँग अति प्रमोद भर ॥६१॥
केवल दै संदेश प्रिया को मान छुड़ावन।
चाहत रसिक नरेश परम लम्पट मन भावन ॥६२॥
यह कबहूँ नहिं भयो होय नहिं कवनेउ काला।
रसत रहैं सखि संग पगे रस रास रसाला ॥६३॥
यदि उन केर अभीष्ट होय निज प्रियै मनाना।
तो आवैं चलि निकट स्वयं रसिकेश सुजाना ॥६४॥
मानै निज अपराध जोरि कर क्षमा करावैं।
तबहिं प्रिया से मिलैं हृदय में अति सुख पावैं ॥६५॥
श्री सुभगा अस नाम मैथिली सहचरि प्यारी।
सुनि तिन के इमि बचन चलीं विमला सुकुमारी ॥६६॥
आईं पिय के पास वन्दि पद खबर सुनाई।
सुनिये परम उदार रसिक मन हर सुख दाई ॥६७॥
निज मति गति अनुसार विपुलश्रम अरु प्रयत्न वर।
मैंने कीनों बहुत किन्तु हे परम सु छबि धर ॥६८॥
मेरो यह अनुमान अनन्या प्रिया तिहारी।
अपर न कोइ समझाय सकै हे रास बिहारी ॥६९॥
याते जीवन प्राण कृपा करि आप पधारिय।
जैसे मनै मनाय प्रियै निज कार्य सुधारिय ॥७०॥

Scanned by CamScanner

सब को मानद आप सतत ऐसो स्वभाव वर ।
है जीवन धन आप केर हे रूप शील घर ।७१।।
तब श्यामा निज प्रियै मान देवत कथा लाजा ।
याते उठि हृदयेश चलिय प्रमुदित रघुराजा ।।७२।।
चाहत हो निज इष्ट सिद्धि तो चलिय शीघ्र तर ।
स्वयं मनाइय जाय प्रिया को परम प्यार कर ।।७३।।
क्योंकि आप अति बिकल उनहिं बिन परम दुखारी ।
वहाँ रावरी प्रिया क्लेश पावत अति भारी ।।७४।।
तुम दोउन को क्लेश हमनि को अति दुख कारी ।
याते जीवन प्राण रास लम्पट मन हारी ।।७५।।
चलिये अतिसय शीघ्र देर कीजिय जनि प्यारे ।
सुनि विमला के बचन उठे अवधेश दुलारे ।।७६।।

❀ श्री प्रिया प्रीतम संयोग प्रकरणम् ❀

गमने प्यारी पास प्राण वल्लभ रघुनन्दन ।
सखियन रति रस दान रसिक मन हर जग वन्दन ।।७७।।
उधर कियो अनुमान हृदय बिच जनक दुलारी ।
सखि ने पिय से कहा जाय आवहिं धनुधारी ।।७८।।
पिय के आये बिना बनै नहिं उन को कामा ।
यासे अइहैं अवसि प्राण वल्लभ छबि धामा ।।७९।।
अस्तु मुझे यह उचित दूसरे कुञ्ज मझारी ।
छिप जाऊँ अति शीघ्र फिरैं खोजत धनुधारी ।।८०।।

Scanned by CamScanner

अस निज हृदय बिचारि चली उठि प्राण पियारी ।
पहुँची अपर न कुन्ज मध्य में ही मुद कारी ।८१॥
प्राप्त भये प्राणेश मिले दृग से दृग जबहीं ।
अतिसय प्रेमावेश सकीं रुकि प्रिया न तबहीं ॥८२॥
ललकि लगीं पिय कण्ठ परम आनन्द समाई ।
मानहुँ परम दरिद्र अखिल जग सम्पति पाई ॥८३॥
प्रीतम प्रेम विभोर प्रिया को कण्ठ लगाई ।
परमानन्द समुद्र मगन तन सुरति भुलाई ।८४॥
यह पिय प्यारी केर महाँ रस मगन योग नित ।
बना रहे येहि भाँति चहत सबही प्रमुदित चित ॥८५॥
सो सहजहिं हो गया अचानक निरखि देव गन ।
दुन्दुभि दीन बजाय परमसुख पाय मुदित मन ॥८६॥
बर्षन लागे सुमन सकल जग हर्ष सयायो ।
परमानन्द प्रवाह सिन्धु क्षण-क्षण उमगायो ।८७॥
सत् चित् आनन्द ब्रह्म परात्पर रूप युगल वर ।
श्री सीता युत राम मधुर दाम्पत्य सरस तर ॥८८॥
सकल जगत से भिन्न अपर दाम्पत्य न येहि सम ।
नव नायक नायिका नेह नव पगे अनूपम ॥८९॥
इनहिं सिवा दाम्पत्य अपर में तेज बुद्धि बल ।
जो कछु रहा दिखाय अंश इनहीं को सब थल ॥९०॥
सहजहिं स्नेह मिलाय निरखि पिय प्यारी केरो ।
दोउ दिशि की सहचरी मुदित मुख लह्यो घनेरो ॥९१॥

Scanned by CamScanner

नव--नव उत्सव करन लगीं आनन्द समाई।
गावहिं मंगल गीत बिपुल वर बाद्य बजाई ॥९२॥
अति अनुराग समेत परस्पर मिलत सिहाई।
सब के दृग अरु भौंह भ्रमत सबहिय उमगाई ॥९३॥
परम आचरज सहित दिव्य दम्पति मिलाप वर।
निरखि सहचरी बृन्द परस्पर दृगन नेह भर ॥९४॥
करि कटाक्ष कमनीय महाँ आश्चर्य समाई।
ललना गण संकेत एक को एक जनाई ॥९५॥
प्रेमावेश बिशेष प्रिया पिय हिय से लागीं।
अतिसय रोदन करन लगीं प्रीतम रस पागीं ॥९६॥
विम्बाधर बिधु बदन सुहावन अनुपम पावन।
लखि जीवनधन प्राण कहत न न न न मन भावन ॥९७॥
येहि विधि रहे चुपाय प्रिया को प्राण अधारे।
रस लम्पट रसिकेश रसिक मन हर सुकुमारे ॥९८॥
सिथिल भये सब अंग प्रिया के परम विकल तर।
रोवहिं प्रेम विभोर पिया लपटाय हर्षि उर ॥९९॥
नहिं–नहिं रोवहु व्यर्थ कहत प्रीतम सुजान वर।
देवत अति सन्तोष प्रियै लगि कण्ठ सु छबि धर ॥१००॥

दो०–ऊँचे स्वर बोलत बचन, जीवन प्राण अधार।
सीताशरण सनेह सनि, सरल सुखद मन हार ॥५॥

हे प्राणाधिक प्रिये तुमहिं हम अन्य तियन सम।
मन में मानत नहीं कदा तुम सब विधि अनुपम ॥ १ ॥

Scanned by CamScanner

मेरी सदा सहाय सर्व कारज में प्यारी।
व्यामोहित करि चित्त मोर अपने बश कारी ॥ २ ॥
मनोरमा सब भाँति मोर मन चित बुधि सारे।
तव सौन्दर्य गुणादि बिबश नित रहत सुखारे ॥ ३ ॥
तुमहिं छोड़ि दूसरी जगह मन रमत न मेरो।
अह्लादिनि चित केर मोरि मम दिशि हँसि हेरो ॥ ४ ॥
वाणी श्री लच्मी आत्मविद्या तुम मोरी।
हे सुन्दरि सब भाँति सजीवनिमूरि किशोरी ॥ ५ ॥
मम जीवन अधार तुमहिं लखि-लखि हम जीवत।
कार्य संधिनी प्रिये सतत तव छबि रस पीवत ॥ ६ ॥
नित नव्या माधुरी विशल्या सब बिधि मोरी।
बर्धक मम सुख शान्ति प्रेम पूरित अति भोरी ॥ ७ ॥
मम सुपूर्वा शक्ति मोहिं प्राणाधिक प्यारी।
निरखत सतत कटाच्च देवि हम हो वलिहारी ॥ ८ ॥
अखिल शृष्टि में जहाँ तलक देखिय अरु मानिय।
सो तव कृपा कटाच्च सकल अधीन जिय जानिय ॥ ९ ॥
पुनि हे देवि हमार शक्ति अनपायिनि श्री वर।
वाहू की श्री आप अहैं सब विधि उदार तर ॥१०॥
श्यामा सुभग स्वरूप कुमारी तरुणी सुख कर।
आश्चर्य गुणवती गुणाज्ञा शुचि सुशील तर ॥११॥
महिमा अमित अपार परम आश्चर्य प्रदायक।
तुम्हरो महाँ प्रभाव जनकजा तुम सब लायक ॥१२॥

Scanned by CamScanner

मेरी तुम सर्वस्व मैथिली तव आधीना।
रहौं सतत प्रतिकूल कदा नहिं सुनहु प्रवीना ॥१३॥
अपनी जान न करौं देवि अपराध तिहारो।
बिन जाने जो भयो होय सो क्षमहु हमारो ॥१४॥
जिमि कर पद दृग अंग रहित अंगी आधीना।
तिमि हम तव आधीन रहौं हे प्रिया प्रवीना ॥१५॥
कहौं देवि कर जोर कोप भरि मोसे वयना।
कहिय न दोष समेत दिखाइय अपने नयना ॥१६॥
कदा क्रोध की दृष्टि आप देखिय नहिं हम को।
बारम्बार सनेह सहित समझावौं तुम को ॥१७॥
सुनि पिय के इमि वयन मधुर रस भरित सुखद वर।
बोलीं श्री मैथिली हृदय में अति उमंग भर ॥१८॥
हे पिय परम प्रवीण प्राण के प्राण हमारे।
आत्मनाथ हृदयेश रमण मम दृगन सितारे ॥१९॥
हे उदार हे सौम्य सरल सुन्दर सुजान वर।
हे जीवन धन लाल कृपा सागर सनेह घर ॥२०॥
कबहुँ अनिष्ट स्वरूप दृष्टि होवै नहिं तुम में।
हो मेरे सर्वस्व रमत हो सन्तत हम में ॥२१॥
तुम में होय अनिष्ट दृष्टि जो पै पिय मोरी।
तौ त्यागौं निज प्राण कहौं मैं दोउ कर जोरी ॥२२॥
तजे बिना सर्वथा क्रोध पति व्रता धर्म वर।
तासु सिद्धि नहिं होय कदा कोइ कोटि यत्न कर ॥२३॥

Scanned by CamScanner

पुनि हे देव उदार आप तो मंगल रूपा।
अज अनन्त अखिलेश अमल अनवद्य अनूपा ॥२४।
मेरे प्राणाधार आप के बिषय क्रोध मम।
हो सकता केहि भाँति कहिय हृदयेश मधुर तम ॥२५॥
येहि बिधि प्रेम प्रमोद पगे दोनों पिय प्यारी।
करत परस्पर बात हृदय लगि परम सुखारी ॥२६॥
सकल सहचरीं बृन्द दोउन को प्रिय मिलाप वर।
लखि-लखि परमानन्द लहैं हिय अति उमंग भर ॥२७॥
मधुर सरस संगीत कीन प्रारम्भ मुदित उर।
लहैं परम सुख स्वाद निरखि दोउ रूप रसिक वर ॥२८॥
प्रथमै श्री मैथिली सखिन से कहा बुझाई।
मिलन समय पिय केर मधुर संगीत सिहाई ॥२९॥
कर देना प्रारम्भ गान करि पियै रिझाई।
दीजै परमानन्द स्वाद सुख अमित अघाई ॥३०॥
कोटि-कोटि रति काम मान मर्दन पिय प्यारी।
श्याम गौर मन हरन मधुर मूरति छवि धारी ॥३१।
सखिन केर दृग हृदय सर्वथा हरि निज वश करि।
विलसत "सीताशरण" युगल रसिकेश मोद भरि ॥३२॥
करि वर्णन येहि भाँति कहत श्री सूत हर्षि मन।
नव यौवन सम्पन्न प्रिया प्रीतम अति सुठि तन ॥३३॥
बिपुल सुभोग बिहार पगे मन हरन मधुर तर।
मेष राशि गत भानु दिनन विहरत सु विपिन वर ॥३४॥

Scanned by CamScanner

कबहुँ सुगन्धित पुष्प रचित मण्डप सुठि मन हर ।
राजत तहँ मैथिली संग अवधेश सुवन वर ॥३५॥
चक्रवर्ति अवनीश कुँअर श्री राम नाम अस ।
दिव्य गन्ध अनुलिप्त अंग पावन उदार यश ॥३६॥
लीने दोउ कर कंज जलज शोभित रघुनन्दन ।
रूप अनूप अपार मार मद हर सुख कन्दन ॥३७॥
चहुँदिशि सखी समाज मुदित मन गुण गण गावहिं ।
'सीताशरण' सनेह सहित नित सिय पिय ध्यावहिं ॥३८॥
बिपुल नवल नायिकन संग अनुराग रंग रँगि ।
दिव्य विलास विनोद हास्य मय बचन प्यार पगि ॥३९॥
कहत रसिक सिर मौर प्राण जीवन धन प्यारे ।
अति कोमल चित नेह भरे रस रूप उजारे ॥४०॥
करि तिरछे दृग शयन मन्द मुसुकाय मोद भरि ।
चतुर चपल चितचोर प्रिया कुच पर निज कर धरि ॥४१॥
देत महाँ आनन्द प्रिया युत सकल नागरिन ।
रूप शील की खानि परम रस निधि उजागरिन ॥४२॥
करि कटाक्ष कमनीय केलि रस रसिक रँगीले ।
सब को मन चित हरत प्रेम लम्पट रिझवीले ॥४३॥
दक्षिण कर व्याख्यान केर मुद्रा दिखलावत ।
पगे सखिन के रंग मन्द हँसि-हँसि बतलावत ॥४४॥
ऐसे परम परेश प्रेम पालक सर्वेश्वर ।
ध्यावत 'सीताशरण' सतत सिय पिय हृदयेश्वर ॥४५॥

Scanned by CamScanner

मुख में जेहि के बसत कृष्ण भगवान सु छवि धर।
स्थिर हिय में बसत राम अभिराम रसिक वर ॥४६॥
रक्षणार्थ नित बसत शीश श्रीमन्नारायण।
ऐसे श्री मद्व्यास देव सियराम परायण ॥४७॥
उनको करौं प्रणाम प्रेम पगि अति सुख पाई।
जिनकी कृपा प्रसाद लही रस रीति सुहाई ॥४८॥
मुख से जो श्रीकृष्ण चन्द्र के गुण गण गावत।
हिय में सतत सनेह सने सिय रघुवर ध्यावत ॥४९॥
सिर से करत प्रणाम सदा आनन्द समाई।
नारायण भगवान काहिं ऐसी चतुराई ॥५०॥
पर हिय में सर्वदा परम सर्वेश्वर जानी।
निज उपास्य सर्वस्व सिया रघुवर को मानी ॥५१॥
राखत हृदय छिपाय सतत अभ्यन्तर ध्यावत।
"सीताशरण" निहारि युगल मूरति रस पावत ॥५२॥
जयति मैथिली रमणरास रसिया मन रंजन।
जय-जय जीवन प्राण प्रणत पालक भव भंजन ॥५३॥
जयति अशोक सु विपिन मध्य रस रास बिहारी।
जय-जय रसिक नरेश राजनन्दन मन हारी ॥५४॥
जयति सखिन सुख कन्द द्वन्द हर आनँद कारी।
जय--जय रति रस मगन प्रेम लम्पट छबि धारी ॥५५॥
जयति जानकी प्राण नाथ हिय सुख सु स्वाद भर।
जय--जय श्री अवनिजा पिया मन हर सुशील तर ॥५६॥

Scanned by CamScanner

जयति परम मानिनी मान राखत नित रघुवर ।
जय--जय पिय रस पगीं प्रेम पूरित उदार तर ॥५७॥
जयति सजीवनि मूरि प्राण की प्राण हमारी ।
जय--जय 'सीताशरण' रहौं निशिदिन वलिहारी ॥५८॥
जयति सखिन सँग प्राणनाथ युत नवल विहारिनि ।
जय-जय सिय स्वामिनी मधुर मनहर छवि धारिनि ॥५९॥
जयति प्रिया मुख कंज मंजु मन मधुप समाना ।
जय--जय सीताशरण प्राणधन सुखद सुजाना ॥६०॥
दो०-जयति-जयति पिय हिय लगी, सिय स्वामिनी उदार ।
जय-जय सीताशरण नित, जीवन प्राण अधार ॥ १ ॥
जयति-जयति प्रीतम प्रिया, सहचरि बृन्द अपार ।
जय-जय सीताशरण मैं, रहौं सदा वलिहार ॥ २ ॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी बिलासे, बिबाहोत्तर
देव कन्या रस रासे, सीताशरण सुमति प्रकाशे
दशमोऽध्याय: सम्पूर्णम्

* एकादशोऽध्याय: *

गन्धर्व कन्या रास प्रकरणम्

छन्द रोला:-

परम विचित्र पुनीत सुखद अति गोप्य चरित वर ।
चाहत वर्णन करन सूत हिय अति उमंग भर ॥ १ ॥
याते सहित सनेह नमत अंजनी कुमारहिं ।
पुनि--पुनि करत प्रणाम मुदित मन परम उदारहिं ॥ २ ॥
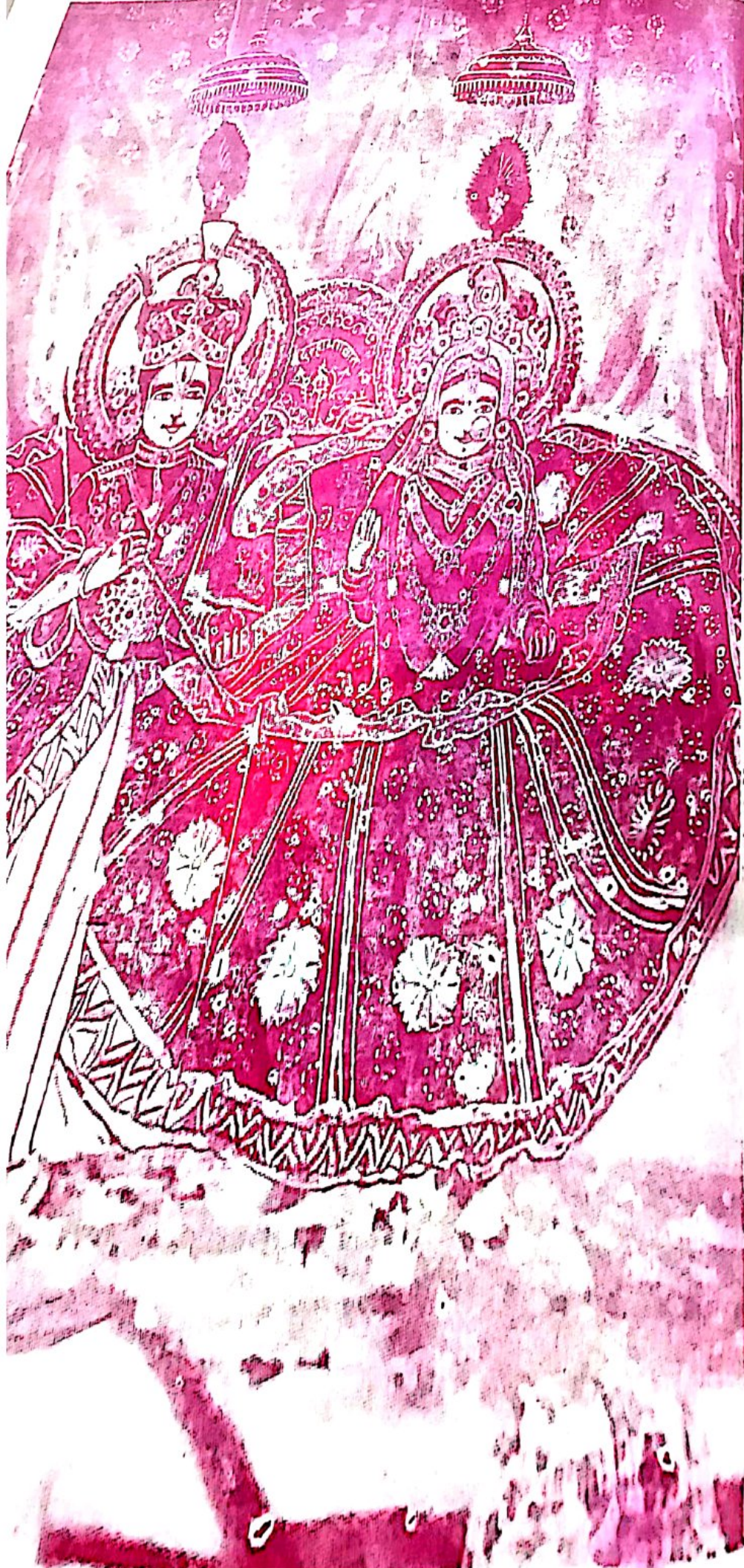
Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

मंगल

श्री शयन कुंज

Scanned by CamScanner

जानकी शरण, देहरा दून
५.५.८६
श्रंगार कुँज

जानकी शरण
देहरादून

जानकी शरण देहरादून
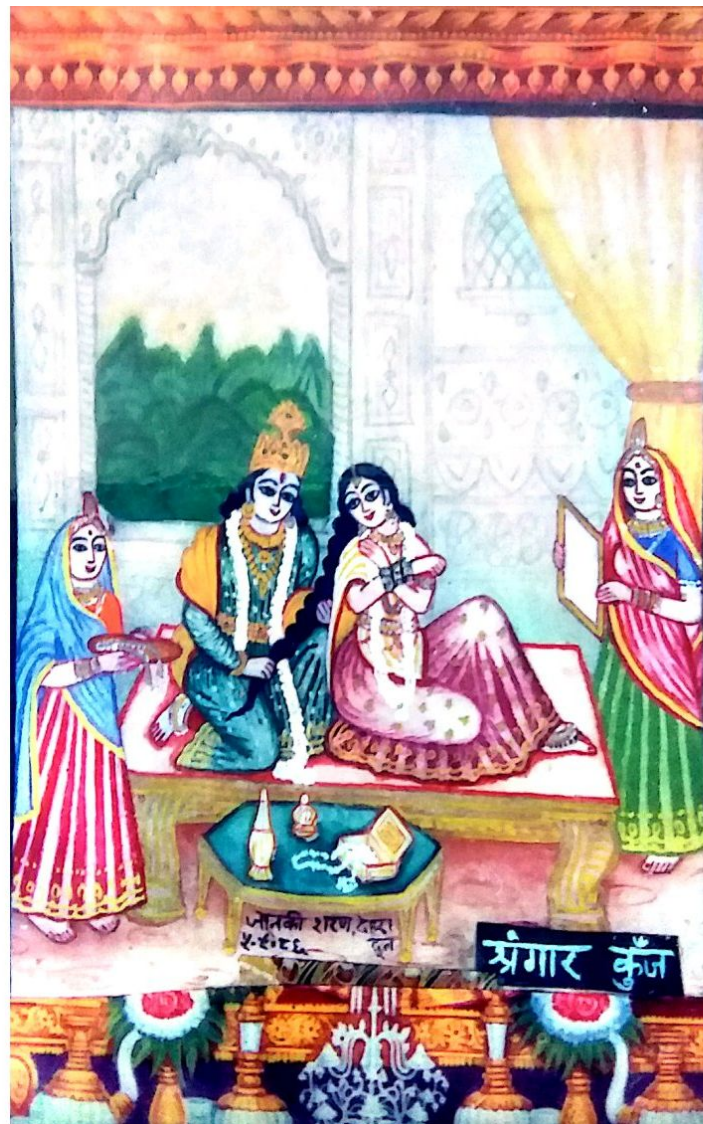
सेज पर मान किये रसदानी
पिय जाचक कर जोरी मनावैं विनय करैं मृदु बानी

श्री सीताराम

Scanned by CamScanner